* जानने की प्रक्रिया :-

परिचय

हम इस बात से पूरी तरह से सहमत है कि आज के संसार मे ज्ञान और उसकी रचना करने की क्षमता एवं उपयोग करना किसी भी व्यक्ति के लिए लाभदायक है। व्यक्ति के ज्ञान का विस्तार उसके संसार के प्रति लगातार व्यवहार से बनता है जो हरेक का एक - दूसरे के साथ परस्परिक ध्यान का वास्तविक प्रतिबिम्ब है।

आज के आधुनिक युग मे ज्ञान और ज्ञान को अर्जित करना तथा उसको उपयोग करना व्यक्ति के लिए लाभदायक है। ज्ञान को वातावरण के साथ एक प्रक्रिया के रूप मे धारण किया जा सकता है।

जानने का अर्थ :-

ज्ञान प्राप्त करना एक लम्बी प्रक्रिया है जो कि एक - दूसरे के सम्प्रत्यय के साथ चलती रहती है जैसे कि व्यवस्था और अव्यवस्था, वृहद और सूक्ष्म, पूर्ण और अपूर्ण मस्तिष्क और शरीर यहाँ यह समझना आवश्यक है कि ज्ञान, रचना एक उत्कृष्ट प्रक्रिया है। जिसमे व्यक्ति, समूह, संस्थान सभी से जोड़कर नये ज्ञान अर्जित किये जाते है। इस प्रक्रिया मे नये सम्प्रत्यय और संरचनाये निर्मित होती है जो इस ज्ञान अर्जन मे संभावनाओ के साथ बाधाये भी उत्पन्न करती है। अतः ज्ञान के सक्रिय प्रक्रिया है।

जानने वाले की जनता का स्तर जानने की प्रक्रिया को इंगित

DATE
PAGE

करता है। शिक्षा जानने वालों को प्रशिक्षित करती है जिससे जानने वालो को मस्तिष्क मे अधिक - से - अधिक ज्ञान का भण्डारण कर सके। जानने की प्रक्रिया एक व्यक्तिगत कार्य है क्योकि व्यक्ति कार्य, अनुभव और अज्ञानता के संबंधो द्वारा प्रभावित होता है। ज्ञान के तीन भाग है :- ज्ञान, ज्ञाता, जानने की प्रक्रिया

* जानने के विभिन्न तरीके :-

जब कोई बालक या व्यक्ति ज्ञान को प्राप्त करता है तो स्वभाविक रूप से अपनी इंद्रियो का प्रयोग करता है जो निम्नलिखित है :-

1) इन्द्रियो का उपयोग
② भाषा का उपयोग
③ संवेग का उपयोग
④ तर्क का उपयोग

① इन्द्रियो का उपयोग :-

इन्द्रियो का उपयोग एक सक्रिय चयनात्मक और व्याख्यात्मक प्रक्रिया है जो बाहरी दुनिया के प्रति ज्ञान प्राप्त करने के लिए इन्द्रियो के उपयोग द्वारा हम जानकर जाती है। यह इन्द्रिया अनुभव मुख्य रूप से पाँच ज्ञान इन्द्रियाँ - स्पर्श, बोध, स्वाद, श्रवण और दृष्टि के माध्यम से प्राप्त की जाती है। यह यह जानना आवश्यक है कि संवेदना एक साधारण इन्द्रिया अनुभव है जो हमें वस्तु की विशेषताओ को जानने मे सहायता करती है। जैसे :- रंग, आवाज, स्वर, गर्मी, सर्दि इत्यादि।

(2) भाषा का उपयोग :-

भाषा एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक ज्ञान पहुँचाने के माध्यम के रूप मे कार्य करती है। इसमे वे सहमति और परम्परागत अर्थ शामिल है जो संचार, उद्देश्य, विचार के निर्माण के भण्डार के माध्यम के अनुसार है। भाषा से वे सभी ज्ञान एकीकृत किये जाते है जो विभिन्न स्थानो और अलग स्रोतो से मिलते है भाषा हमे ज्ञान को स्पष्ट रूप से बोलने और ज्ञान को एकिकृत करने मे सहायता करती है।

(3) संवेग :-

संवेग हमारे विचारो को आकार देता है और व्यवहार को प्रभावित करने मे और ज्ञान की प्राप्ति को बढ़ाने के लिए एक व्यक्ति की भूमिका निभाते है। यद्यपि संवेग हमारे आत्मा समस्त तथा संसार को समझने की कुंजी है।

(4) तर्क :-

तर्क किसी ज्ञान को निष्कर्ष तक पहुँचने का मुख्य साधन है। यह हमे शुरु करने से लेकर अंत करने को भी सन्तुष्टि के साथ अनुमति प्रदान करता है।

* कक्षा - कक्ष मे ज्ञान के रचना की प्रोत्साहन विधियाँ :-

कक्षा - कक्ष मे ज्ञान की संरचना को बढ़ाने के लिए सबसे आवश्यक है। छात्रों को जाग्रत करना जिससे वह विचार - विमर्श कर पाठ्यक्रम के

माध्यम से तथा शिक्षक के निर्देशों के अनुसार ज्ञान का अर्जन करते है। कक्षा-कक्ष मे ज्ञान को प्रोत्साहित करने के लिए निम्न विधियाँ है:-

1) व्याख्यान विधि
2) विश्लेषण
3) संश्लेषण
4) मूल्यांकन

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष के रूप मे कह सकते है कि ज्ञान एक गतिशील प्रक्रिया है जिसमे लगातार वार्तालाप और अभ्यास शामिल रहता है। इसमे जानने वाला विषय-वस्तु और जानने की प्रक्रिया आपस मे अतःक्रिया करते है जिसके फलस्वरूप ज्ञान की रचना होती है। जानने के विभिन्न विषयों, विधियो मे इन्द्रिय बोध भाषा और भावना सम्मिलित है।

अतः ज्ञान प्राप्ती करने मे अधिगमकर्ता का सक्रिय होना अतिआवश्यक है।